सारे सबक किताबों में नहीं मिलते कुछ जिंदगी भी सिखाती है।
– अज्ञात

जलवायु में बदलाव के पैटर्न

ऐसे अध्ययनों के फायदे अमूमन दो स्तरों पर देखे जाते हैं। एक तो यह कि इनके निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए घटनाओं के प्रवाह की दिशा जहां तक हो सके मोड़ने की कोशिश की जाए, या कम से कम उसकी गति को कम करने का प्रयास किया जाए।

नवीन वर्मा।

जलवायु परिवर्तन संबंधी एक ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि 21वीं सदी समाप्त होते–होते भारत में गर्म दिन और गर्म रातों की संख्या 1976 से 2005 की अवधि के मुकाबले 55 से 70 फीसदी तक बढ़ जाएगी। यह पहला मौका है जब भारत सरकार के संस्थानों से जुड़े विशेषज्ञों ने भारत को केंद्र बनाकर जलवायु में बदलाव के पैटर्न को समझने की एक बड़ी कोशिश की है। अपने ढंग के इस अनूठे आकलन में कहा गया है कि सदी बीतने तक देश के औसत तापमान में 4.4 डिग्री सेल्सियस तक की बढ़ोतरी हो जाएगी।

समुद्र तल का स्तर भी तब तक 30 सेंटीमीटर बढ़ जाने का अनुमान है। इस स्टडी की सबसे अच्छी बात यही है कि अगले अस्सी वर्षों में देश का मौसम किस तरह करवट बदलने वाला है, इस अनुभूति तक इसने हमें सटीक ब्यौरों के साथ पहुंचाया है। ऐसे अध्ययनों के फायदे अमूमन दो स्तरों पर देखे जाते हैं। एक तो यह कि इनके निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए घटनाओं के प्रवाह की दिशा जहां तक हो सके मोड़ने की कोशिश की जाए, या कम से कम उसकी गति को कम करने का प्रयास किया जाए। क्लाइमेट चेंज की यह समस्या वैश्विक है और दुनिया के तमाम देश अपने–अपने ढंग से इसमें योगदान कर रहे हैं, इसलिए भारत अकेला इस मामले में कुछ खास नहीं कर सकता। ऐसे में इस मोर्चे पर जितना संभव हो, प्रयास करते हुए हमें

अपना ध्यान दूसरे मोर्चे पर लगाना पड़ेगा। यह दूसरा मोर्चा है इन बदलावों को अवश्यंभावी मानते हुए अपनी जरूरतों और आपूर्ति को उनके अनुरूप ढालने की कोशिश करना। इस संदर्भ में भारत के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि हमारे यहां ठंडे और गर्म, दोनों तरह के इलाके हैं और अलग–अलग तापमान वाली फसलें उगाने का अच्छा–खासा तजुर्बा हमारे किसानों के पास है।

आगे की जिम्मेदारी काफी हद तक कृषि वैज्ञानिकों पर आती है कि वे गेहूं जैसे कम तापमान और अधिक पानी चाहने वाले अनाज की ऐसी किस्में विकसित करें जो अधिक तापमान में कम पानी के सहारे जीवित रह सकें, या फिर पुराने, रफ–टफ मोटे अनाजों की ऐसी किस्मों पर काम करें जो अभी की स्वाद ग्रंथियों के ज्यादा अनुकूल हो।

मौसम के इन उतार–चढ़ावों से घबराने के बजाय यह देखना ज्यादा उपयोगी होगा कि इनके नुकसान साथ में कुछ फायदे भी लाते हैं। जैसे, बार–बार आने वाले वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के चलते इस बार जहां हमें बेमौसम आंधी–पानी का झटका कुछ ज्यादा ही झेलना पड़ा, वहीं इनके चलते जमीन में नमी बनी रही तो किसानों ने खरीफ की बुआई पिछले साल की अब तक की अवधि के मुकाबले 13.2 फीसदी ज्यादा कर दी। इसके चलते कम से कम कृषि क्षेत्र में हम लॉकडाउन के दुष्प्रभावों से बचे रहने की उम्मीद कर सकते हैं।

अहसास

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

खुशी इस बात का अहसास है कि बुद्धिमानी से दूर नहीं जया जा सकता। यह दुनिया ऊपरी तौर पर भले ही अधूरी या अपूर्ण नजर आती हो लेकिन गहराई में जाने पर यह पूर्ण है। पूर्णता छिपाती है और अपूर्णता असल बात सामने रखती है। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति केवल ऊपरी हालातों को नहीं बल्कि गहराई में जाकर चीजों को समझता है। चीजें धुंधली नहीं होती, धुंधला आपका दृष्टिकोण है। इस बात को समझिए और स्वाभाविक रहने की कोशिश करें। इस दुनिया में कुछ भी, कोई भी ऐसा नहीं है जो हर समय परफेक्ट हो। यहां तक कि बहुत सोच–समहकर, अच्छी नीयत के साथ किया गया कार्य भी परफेक्ट नहीं हो सकता, उनमें भी कोई ना कोई खामी, कोई ना कोई त्रुटि होती ही है।

संपादकीय

चेहरों के भरोसे कांग्रेस

बिहार में कांग्रेस लगभग मृतप्राय है। कांग्रेस का संगठन कागजों पर है। बिहार में जमीन पर कांग्रेस के कार्यकर्ता शायद ही कहीं दिखते हों। ऐसे में कुछ चेहरों के भरोसे कांग्रेस कुछ बड़ा हासिल कर लेगी, इसमें शंका है। विपक्षी दलों में वामपंथी दल सीपीआई और सीपीएम कहीं नहीं दिखते। अगर हम यह कहें कि इनका संगठन लुप्तप्राय हो चुका है तो इससे किसी को नाराज भी नहीं होना चाहिए। हां, सीपीआई (एमएल) का प्रभाव कुछ खास क्षेत्रों में थोड़ा बहुत दिखता है, लेकिन प्रदेश स्तर पर कुछ बड़ा कर पाने की स्थिति में वह भी नहीं है।

पिछले 5 सालों में अति पिछड़ी जातियों से जुड़ीं कुछ जातिगत पार्टियों का उदय हुआ। लेकिन पिछले दिनों उनके सारे प्रयोग फेल हुए हैं। ये पार्टियां आम जनता तो छोड़िए अपने समाज के बीच भी कुछ खास प्रभाव छोड़ने में विफल साबित हुई हैं। निश्चितताैर पर नीतीश कुमार, रामविसाल पासवान के साथ बीजेपी का गठबंधन बिहार में बेहद मजबूत है। सत्ता में नीतीश कुमार की 'बी टीम' होने की वजह से लोगों का जितना गुस्सा नीतीश से है, उतना बीजेपी से नहीं। यह बीजेपी के लिए प्लस पॉइंट साबित हो सकता है। आज की तारीख में बीजेपी के पास संगठन, संसाधन सबकुछ है। सत्ता में रहने के बावजूद भी लोगों का भरोसा अन्य दलों की तुलना में बीजेपी में ज्यादा है। अल्पसंख्यक समुदाय को छोड़ दें तो समाज के सभी वर्गों में बीजेपी की पकड़ भी अच्छी है। सवर्ण, पिछड़ी जातियां, और दलित समाज में उसके अच्छे खासे समर्थक हैं। अब सवाल उठता है कि इतना कुछ पक्ष में होने के बावजूद बीजेपी अकेले चुनाव लड़ने की तैयारी क्यों नहीं कर रही है? हिन्दी पट्टी में बिहार ही एक ऐसा प्रदेश है जहां बीजेपी को अब तक अकेले सत्ता नहीं मिली है। यह टिस बीजेपी को हमेशा सताती रहती है।

बिहार में विपक्ष असहाय है। बेहद कमजोर है। नेतृत्व से भी और संसाधन से भी। साथ ही इस बार विपक्ष का चमत्कारिक चेहरा यानी लालू प्रसाद यादव जेल के अंदर हैं।

चुनावी तैयारियां शुरू

शिवेंद्र कुमार

बिहार में चुनावी तैयारियां शुरू हो गई हैं। सभी राजनीतिक दल इसकी तैयारी में लग गए हैं। बीजेपी गृहमंत्री अमित शाह की वर्चुअल रैली के साथ ही इसका श्रीगणेश कर चुकी है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी कोरोना से जुड़ी नियमित समीक्षा वाली अपनी शाम की बैठक स्थगित कर दी है और वह चुनाव की तैयारियों में लग गए हैं।

अगर कोरोना महामारी का प्रकोप नहीं बढ़ा तो संभव है नियत समय पर विधानसभा के लिए मतदान करा लिए जाऐंगे। 2015 की तुलना में इस बार का माहौल कुछ अलग है। 2015 में बीजेपी की अक्रामक रणनीति को लालू–नीतीश की जोड़ी से बड़ी शिकस्त मिली थी। लेकिन, अब स्थितियां बिल्कुल बदली हुई हैं। बिहार में विपक्ष असहाय है। बेहद कमजोर है। नेतृत्व से भी और संसाधन से भी। साथ ही इस बार विपक्ष का चमत्कारिक चेहरा यानी लालू प्रसाद यादव जेल के अंदर हैं। फिलहाल उनके बाहर आने की उम्मीद भी नहीं दिख रही है।

बिहार में एनडीए के नेता नीतीश कुमार हैं। बीजेपी का भी कहना है कि वह नीतीश के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ेगी। अब सवाल उठता है कि नीतीश कुमार पिछले 15 सालों मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज हैं तो उनसे लोगों की नाराजगी

भी होनी चाहिए। वह है भी और यह नाराजगी जायज भी है। अब जनता के बीच यह आवाज उठने लगी कि इन्होंने किया क्या? सड़क, बिजली के सिवा और कुछ खास उपलब्धि नहीं रही। रोजगार के मोर्चे पर सरकार नाकाम साबित हुई है।

कोरोना माहामारी के दौरान प्रवासी मजदूरों की वापसी भी नीतीश के लिए मुसीबत बन रही है। ये सब अब राज्य सरकार से उम्मीद लगाए बैठे हैं कि इन्हें रोजगार अपने घर में मिले। सरकार के मुखिया होने की वजह से इनकी अपेक्षाएं नीतीश कुमार से ही हैं। फिलहाल लाखों की संख्या में घर लौटे प्रवासी मजदूरों को रोजगार मुहैया करा पाना राज्य सरकार के बुते से बाहर की बात लग रही है। स्वाभाविक है ऐसे में नीतीश से नाराजगी और बढ़ेगी। लेकिन, नीतीश से नाराजगी बढ़ने पर जनता के पास विकल्प क्या है? प्रदेश के सियासी पंडितों और आम लोगों के सामने यह बड़ा सवाल उठ रहा है।

विकास के तमाम मामलों में नीतीश की विफलता के बावजूद लोग आरजेडी यानी लालू–राबड़ी के शासनकाल के अराजकता को भूले नहीं हैं। उन्हें अब भी डर है कि आरजेडी की वापसी एक बार फिर प्रदेश को अराजकता के दौर में ढकेल सकती है।

यही नहीं, आरजेडी का वर्तमान नेतृत्व यानी लालू प्रसाद के छोटे बेटे तेजस्वी यादव यादव को विपक्ष को एकजुट करने के लिए अभी बहुत मेहनत करने की जरूरत है। साथ ही लंबा समय मिलने के बावजूद वह अब तक अपने नेतृत्व क्षमता को भी साबित नहीं कर पाए हैं। वह अब भी एक खास जाति और मजहब के नेता की छवि से खुद को बाहर नहीं निकाल पाए हैं। ऐसे में यह कहना कि नीतीश से नाराज वोटर तेजस्वी के नेतृत्व वाले विपक्ष के पास चला जाएगा, अभी जल्दबाजी होगी। बिहार में अभी कोई तीसरा विकल्प तो वैसे भी नहीं है और चुनाव से पहले कोई तीसरा विकल्प तैयार होगा इसकी उम्मीद भी नहीं लग रही है।

विपक्षी दल आरजेडी अभी एक खास जाति के ठप्पे से बाहर नहीं निकल पा रहा है। अभी उसका आधार एमवाई (मुस्लिम–यादव) समीकरण ही है।

सूडोकु नवताल-5387

मध्यम

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5386 का हल

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

मानवता जैसे ढाँचे पर, क्यों खाल नहीं है...

कैसा रक्त बहा शहर में,
जो लाल नहीं है।
पुत्र खड़ा है माँ के सम्मुख,
जो लाल नहीं है।
मानवता जैसे ढाँचे पर,
क्यों खाल नहीं है।
श्वेत वदन है खड़ा धूप में,
जो लाल नहीं है।
सुर का संग निभाती,
क्यों ताल नहीं है।
क्यों सा रे गा मा के संग,
वो राहत नहीं है।
अराजकता है अपने चरम पर,
पर उसकी मात नहीं है।
कोई दृश्य कुछ बदल सके,
किरदारों में वो बात नहीं है।
कैसा रक्त बहा शहर में,
जो लाल नहीं है।
देश का युवा भटक रहा,
फिर भी हालात वही है।
महँगाई, बेरोजगारी बढ़ रही,
ये कोई बात नहीं है।
शिक्षा की क्या बात करे,
वो भी आबाद नही है।
अर्थव्यवस्था चकरा गयी,
वो नाराज सही है।
कैसा रक्त बहा शहर में,
लो लाल नहीं है।
पुत्र खड़ा है माँ के सम्मुख,
जो लाल नहीं है।

विकाश सक्सेना, लेखक